

## युवा चितेरों के बीच एक महान सर्जक

1978 में रजा पहली बार भोपाल आए। उन दिनों की स्मृति आज भी साफ और सुरक्षित है उनके पास। आज वो 2008 में तीस साल बाद फिर से भोपाल में हैं। इन तीस सालों में रजा बहुत बार भोपाल आए। कई बार निमंत्रण पर और अक्सर ही खुद से ही। उनका यह लीटना उनका अपने गृह राज्य के प्रति आकर्षण और जन्मभूमि की पुकार भी है। वे हर बार खाली हाथ आते हैं और अनेक तोहफे देकर लीटते हैं। यह तोहफे कई युवा चित्रकारों को मिले हैं। रजा का चित्रकला के प्रति समर्पण किसी से छिपा नहीं है। बाज़रिया से पूरी दुनिया की यात्रा रंगों से ओत-प्रोत है। रजा की उपस्थिति समकालीन कला की धड़कन है। रजा ने उसे रंगों से संवारा और आकर्षक बनाया। आधुनिक चित्रकला को पुनर्परिभाषित किया। रजा के बिना समकालीन चित्रकला में रंगों का चलन सोच पाना असम्भव है। रजा और रंग अब एक-दूसों के प्यार्थ बन चुके हैं। वेन गाँग ने लगभग 150 वर्ष पहले अपने भाई थियों के एक पत्र मे लिखा था-'भविष्य का चित्रकार रंगों का चित्रहार होगा'। यह भविष्यवाणी नहीं थी यह वेन गाँग का अनुभव था। रजा उन बहुत ही बोड़े से कलाकारों में अग्रणी है, जिन्होंने रंगों के महत्व को समझा, रंगों कों नई परिभाषा है।, रंगों के वर्तमान को बरता, रंगों की स्मृतियों को पीछ पुन: नया रूप दिया।

रजा की दूसरी बड़ी विशेषता इन पिछले तीस साल की यात्राओं में, युवा चित्रकारों से उनके फ्रेंह की तरह सामने आती हैं। रजा का यह घेह कई युवा मानस का आत्मबल है। रजा हर वर्ष आते हैं और खुद को थका देने की हट तक युवा चित्रकारों के काम देखते हैं। उनसे बात करते हैं, उन्हें कभी सलाह

वे वासंती आहट लिए कमोवेश हर साल अपने वतन आते हैं। चुनौंचे, इस बार भी हज़रत रजा अपनी जन्मभूमि (मप्र) में नमुदार हए। रजा अपने आप में एक मौसम की मिठास हैं। विनम्न, सादगी और पारदर्शी आभा से मंडित एक सौम्य शिख्सयत, आधुनिक कला जगत के नामचीन चित्रकार। 'पद्यश्री' से लेकर फ्रांस के 'प्रदिला-कित्तीक' जैसे नामी सम्मान तक फैली है उनकी यश यात्रा। फिर भी मध्यप्रदेश की अपनी जन्मभि के बाबरिया गाँव से जन्हें आज भी गहरा लगाव है। रजा गहरे अहसासों और विराट कल्पनाओं के चित्रकार हैं। रजा की रंग सजगता, उनके चित्रों का ज्यामितीय विन्यास, रंग-अध्यात्म और भारतीय परम्परा-संस्कृति के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा उन्हें एक ऐसे मौलिक सर्जक का ओहदा देती है. जिसकी हदों को पार करना फिलवक्त किसी चित्रकार के लिए मुश्किल ही है। रजा बेहद सरल, तरल और विरल अनुभव से मरे काव्य-संवाद का सुख देते हैं। हमने रजा की स्मृतियों को रचना-प्रक्रिया को धीरे-धीरे करेदा और रजा खलते गए।

🗖 रजा साहब, आप कलाकृतियों में रेखाओं के लिए नहीं, रंग-अध्यात्म के लिए दनिया भर में प्रतिष्ठित हैं। क्या यह सौगात आपको जन्मभूमि से मिली है?

रजा: जन्म होने के बाद पहले दस साल मेरे विचार से बहत महत्वपूर्ण हैं। इन्हीं दस सालों में कहना चाहिए कि सारा जीवन बन जाता है। दस-बारह सालों की जिंदगी में लगता है कि भविष्य की संरचना इसी समय होती है और बाद में हम इस बात को भूल जाते हैं। मगर फिर अगर सालों के बाद हम बचपन की ओर जाएँ तो ऐसा लगता है कि जो कुछ भी इस समय हुआ है बाबरिया में, मंडला में, दमोह में, इन तेरह मालों में मारी जिंदगी बसी लगती है। जो भी आज मैं चित्र बना रहा है, मझे लगता है उस जीवन का जिसको मैंने बचपन में, शुरू-शुरू में बिताया है, संघनीकरण (किस्टलाइजेशन) है, या यह उसका फल है, उसका नतीजा है। जैसे कि एक दरस्त के बढ़ते-बढ़ते बाद में उसमें फल और फल आते हैं. उसी तरत बाद में छोटो-छोटा बात. एक नवा विस्तार पाती है।

🗆 आपके आधार रंग हैं लाल, नीला और पीला। यह रंग-त्रिवेणी कई चित्रों में बहती हुई नजर स्तियाँ-पुरुष कपडे पहनते हैं-सफेद, पीले, लाल, नारंगी मझे उतने अच्छे लगे कि उन्हीं को देखकर चित्र बनाता था, जो कि बहत ही रंगभरे होते थे। अब देखिए बहुत ही मुश्किल बात है कि एक रात, एक पहाड और उनको एक छोटे से कैनवास में रंगों के जरिए लाना और वह रंग कैसे होंगे? ऑकर ब्राउन, ग्रीनिश हो सकता है कि घरों

हरियाली भी आ जाए। 🛘 रंगों की संगति का वित्रों में बड़ा महत्व होता है। अमर्त-निशब्द होकर भी रंग अपनी ठीक-ठीक संगत के लिए मानों गृहार करते हैं। आप अपनी रंगप्रियता के चलते इस भारणा को किस तरह नेते हैं?

की छत पर आ जाएँ, हो सकता है कि

शुरू में में बहुत में रंगों का इस्तेमल करता है ताकि जिस प्रकार के जीवन को सम्पूर्णता से जीना है, रंगों को केनवास के ऊपर भी सम्पूर्णता से

मैंने इस्तेमाल किया क्योंकि इनको ममयना था चित्र बनाते-बनाते। काले और सफेद की संगति मुझे प्रिय है। इस तारतम्य में मेरा जो पहला चित्र होगा. उसमें में लिखुंगा-ज्यों-ज्यों इबत ज्याम में त्यों-त्यों उज्ज्वल होया



🛘 आपके भीतर एक कवि मन छिपा है। कुछ कविताएँ भी आपने लिखी हैं। क्या यह कवि मन कभी चित्रों को प्रभावित करता है?

मगर कुछ बातों में मुझे बहुत ही दिलचस्पा है। उन्हीं को लेकर मैं जीता हैं और उन्हीं को लेकर में कभी-कभी चित्र बनाता हैं। और इतना ही नहीं, उनको अपने चित्रों में लिख भी देता हैं। मेरे ख्याल से चित्रकार या कवि हमारे आज के कठिन समय के बारे में बहुत

कछ सोच सकते हैं।

को बड़ी हो बारिकी से देखते हैं. उनसे आपका खुला और आत्मीय संवाद भी होता है। आप हमारे इन युवा सजनधर्मियों से किस तरह की अपेक्षा करते हैं?

जो भारत में हो रहा है वहीं मुझे बहुत महत्वपूर्ण लगता है। मैं बाहुँगा कि आज कल के भारतीय म्युवा अमृतं चित्रों को समझना कलाकार यह देखें कि भारतीय किला

## मर्धन्य चित्रकार सैयद हैदर रजा से मुलाकात

विनय उपाध्याय

बड़ा मुश्किल होता है आम दर्शक के लिए। उथला कलाबांध अक्सर ही आहे आता है चित्र और दर्शक के बीच। ऐसे में भला रजा के चित्रों को कैसे समझा जाएंगा?

लोगों को चाहिए कि चित्रों को देखें।

एक ऐसे स्तर पर पहुँच गई है होवहाँ पर बह स्वतंत्र है। अब हमाहनीय अंतराष्ट्रीय धारणाओं को नकसङ्ग्रही कर रहे है। यानी कि हमारी अभिज्यक्ति भिन्न है। उनके सिद्धांत को समझकर हम कुछ नद बात करना चाहते हो



कलाओं को देखने-समझने से ही

1078 में 7जी पहेली बार भाषाल आण उन दिना की स्मात आज मा साफ आर सरावत है उनक पास। आज वो 2008 में तीस साल बाद फिर से भोपाल में हैं। इन तीस सालों में रजा बहुत बार भोपाल आए। कई बार निमंत्रण पर और अक्सर ही खुद से ही। उनका यह लौटना उनका अपने गृह राज्य के प्रति आकर्षण और जन्मभूमि की पुकार भी है। वे हर बार खाली हाथ आते हैं और अनेक तोहफे देकर लीटते हैं। यह तोहफे कई युवा चित्रकारों को मिले हैं। रजा का चित्रकला के प्रति समर्पण किसी से छिपा नहीं है। बाबरिया से पूरी दुनिया की यात्रा रंगों से ओत-प्रोत है। रजा की उपस्थिति समकालीन कला की धड़कन है। रजा ने उसे रंगों से सँवारा और आकर्षक बनाया। आधुनिक चित्रकला को पुनर्परिभाषित किया। रजा के बिना समकालीन चित्रकला में रंगों का चलन सीच पाना असम्भव है। रजा और रंग अब एक-दूसरे के प्रयार्थ बन चुके हैं। वेन गाँग ने लगभग 150 वर्ष पहले अपने भाई थियों के एक पत्र मे िएवा था-'भविष्य का चित्रकार रंगों का चित्रहार होगा'। यह भविष्यवाणी नहीं थी यह बेन गाँग का अनुभव था। रजा उन बहुत ही थोड़े से कलाकारों में अग्रुणी हैं, जिन्होंने रंगों के महत्व को समझा, रंगों को नई परिभाषा दी, रंगों के वर्तमान को बरता, रंगों की स्मृतियों को पींछ पुनः नया रूप दिया।

रजा की दूसरी बड़ी विशेषता इन पिछले तीस साल की यात्राओं में, यवा चित्रकारों से उनके छोह की तरह सामने आती हैं। रजा का यह धेह कई युवा मानस का आत्मबल है। रजा हर वर्ष आते है और खुद को थका देने की हद तक युवा चित्रकारों के काम देखते हैं। उनसे बात करते हैं, उन्हें कभी सलाह नहीं देते किंत मार्गदर्शन जरूर करते। रजा का यह बीह दुर्लभ है। रजा की कोशिश इस बीह की स्थाई बनाती है। वे जानते हैं। वे जिज्ञासु हैं। वे उदार हैं, उत्कंठा से भरे हुए हैं। भोपाल में आयोजित पयूजन प्रदर्शनी कई पीढ़ियों के चित्रकारों का काम समेटे हैं। 'रंगायन' समूह की यह प्रदर्शनी रजा के प्रति छोटी-सी कृतज्ञ कोशिश है। इसमें शामिल लगभग सभी चित्रकार रजा की लगातार उपस्थिति से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से लाभावित हुए हैं। रजा का मातुभूमि से प्रेम यहाँ के चित्रकरों से बोह इस प्रदर्शनी के परिणाम के रूप में प्रकट हुआ है।



सैयद हैदर रज़ा अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार तो हैं ही, कविता के प्रति उनका अट्ट राग है। उनके मानस में एक संस्कारवान कवि मीजद है। वह चित्रों में उतर आता है। उनके चित्र एक अलग तरह की कविता के मानिद हैं। कविता की किताब उनके हाथ में जब आती है तो वे आद्योपांत पढते हैं। उनकी डायरी में कबीर, मीर, गालिब, निराला, महादेवी, शेरी साथ-साथ केदारनाथसिंह, अशोक वाजपेयी और गिरधर राठी से लेकर पवन करण तक की कविताएँ मौजूद हैं।

रजा साहब अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में कहते हैं-'सिर्फ विचार से काम नहीं बनता इसके लिए साधना और एकाग्रता बहुत जरूरी है। रचना

वस्तृत: उनकी मान्यता है कि कविता हो या चित्र रचना में जल्द बाजी नहीं करनी चाहिए। कलाकर्म समय माँगता है। मानवीय अनुभव सिर्फ आँख से देखना नहीं बल्कि यह महसस करना भी है जो आँख की सामान्य से थोड़ी अधिक होती है। वे मनुष्य और सकल ब्राह्मंड के आंतरिक संबंध को मानते हुए कहते हैं-कि बड़ी बात है इसे चित्र या कविता यानी कला में लाना। चित्रकार जीवन या कलाकृतियों के आसपास ही बात कर पाता है। स्वाद, सुगंध, पीडा, आनंद समझाए नहीं जाते, इसका तो अनुभव चाहिए। वे मानते हैं कि चित्र आँख बंद कर भी बनाए जा सकते हैं। चित्र आँखों से नहीं, मन

वयन का जार बार वा रसा समता

है कि जो कुछ भी इस समय हुआ है

बाबरिया में. मंडला में. दमोह में. इन

तेरह सालों में सारी जिंदगी बसी लगती

है। जो भी आज मैं चित्र बना रहा है.

मझे लगता है उस जीवन का जिसकी

मैंने बचपन में, शुरू-शुरू में बिताया

है, संघनीकरण (क्रिस्टलाइजेशन) है,

या यह उसका फल है, उसका नतीजा

है। जैसे कि एक दरख्त के बढ़ते-बढ़ते

बाद में उसमें फल और फल आते हैं.

उमी तरह बाद में छोटी-छोटा बात.

लाल, नीला और पीला। यह रंग-

त्रिवेणी कई चित्रों में बहती हुई नजर

आती है। आप इन रंगों में किस तरह

शुरूआत में वह समझिए कि साठ और

सतर के साल में मैंने इन रंगों का बहुत

ही ध्यान से प्रयोग किया। संगीत की

तरह चित्रकला में रंगों का उपयोग हो सकता है, जिससे हर प्रकार के भाव

प्रकट किए जा सकते हैं। ऐसा हो सकता

है कि उसमें चित्रों से एक प्रकार का.

क्या कहना चाहिए... दुनियावी सुख

हो, जहाँ पर प्रेम हो, जहाँ पर लाल.

नीले, पीले रंगों से ऐसे चित्र बनाए जाते

हैं जो कि युवावस्था के प्रेम को पा सकें।

ऐसा किया जा सकता है कि वे स्त्री की

ओर इंगिति करें। ऐसा हो सकता है कि

इन चित्रों में स्त्री तत्व आ जाए। उसके

लिए नीले एंग का इस्तेमाल करना

पडता है। यह सच है कि मेरा प्रारंभिक

रंग लाल, नीला और पीला है।

राजस्थान की बहत-सी अभिव्यक्त

यहाँ पर आई हैं। मैं हमेशा जाता था

जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर और वहाँ

के जो रंग हैं वे मुझे बहुत ही भले लगते

थे। शहरों में, गाँवों में जिस प्रकार से

रंगों का महत्व कम नहीं है मेरे लिए।

🗆 आपके आधार रंग हैं

एक नया विस्तार पाती है।

संवेदना खोजते हैं?

## कविता और रंगों की

कदमताल

पतली से परे भी दिखाई देता है। हम उष्णता महसूस कर सकते हैं, आँधी का झोंका झेल सकते हैं, ताजा हवा

ध्रव शुक्ल ने भी रज़ा के चित्रों पर कई कविताएँ लिखी हैं। उनका मानना है कि रज़ा के चित्रों पर जब मैंने कविताएँ लिखीं तो मुझे उनमें भी अलौकिक माँ नजर आई जो कि स्वयं अपने ही आल्हाद की गोद में बैठी है। वे लिखते हैं- '' उनके चित्रों में दिखती। व्याकुल पुरातन माँ। शिश्

में तादातम्य भी जरूरी है लेकिन कभी-कभी तनाव का ऐसा मुकाम भी आता है, जब विचार प्रक्रिया धीमी पड़ जाती है और सहजबुद्धि हावी हो जाती है, तब मैं खुद से पूछना भी छोड़ देता हूँ कि मैं क्या कर रहा हैं। बस विचार आने-जाने हैं मैं उन्हें कैनवास पर उतारता जाता हैं।

की गंध, जंगल का संगीत, चिड़ियों की चहचहाहट सुन सकते हैं। नंगी आँखों से देखने की क्षमता से आगे बढ़कर हम तमाम अनुभवों को मन के भीतर तक महसूस कर सकते हैं। यही संपूर्ण अनुभृति है। किसी संवेदनशील व्यक्ति के लिए और चित्रकार एवं कलाकार की क्षमता



से भी बनने चाहिए। वे एक उदा, देते हए कहते हैं-कि हम प्रेम करते हैं. प्रैम को समझते हैं, तब जाकर प्रेम के ऊपर एक अच्छी कविता लिखते हैं.

भारतीय परंपरा के उन नी रसी की दिशा में अपनी चित्रकतियों का विकास किया है।

अशोक वाजपेयी जैसे वरिष्ठ कवि और रज़ा एक-दूसरे के पुरक हैं। वाजपेयी रजा के चित्रों पर कविता लिखते हैं तो रजा बाजपेयी की कविता का चित्र पेश करते हैं। दोनों एक-दूसरे के साथ बरसों से कदमताल कर रहे हैं। रज़ा की एक कृति पर उनकी कविता है- "आओ

यही बात चित्रों के लिए है।

वे कहते हैं कि मानवीय जीवन के उच्चतर पत्र को प्रमाणिक चित्रों में प्रतिबिम्बत किया जा सकता है। अपने चित्रों के बारे में

उनका कहना है कि मैंने चित्र/रंगों के उद्गम पर खड़े/प्रार्थना मन्न/बेहद के नेदान/ में बिखर रही है/उनके हाथों से

एक छोटे से केनवास में रंगों के जरिए लाना और वह रंग कैसे होंगे? ऑकर ब्राउन, ग्रीनिश हो सकता है कि घरों की छत पर आ जाएँ, हो सकता है कि हरियाली भी आ जाए।

रंगों की संगति का चित्रों में बड़ा महत्व होता है। अमूर्त-निशब्द होकर भी रंग अपनी ठीक-ठीक संगत के लिए मानों गृहार करते हैं। आप अपनी रंगप्रियता के चलते इस धारणा को किस तरह नेते हैं?

शुरू में में बहुत से एंगे का इस्तेमल करता है ताकि जिस प्रकार के जीवन को सम्पूर्णता से जीना है, रंगों को कैनवास के ऊपर भी सम्पूर्णता से उनका उपयोग करना है। डेन्हें हमें समझना है कि लाल के पास अगर भूरा हो या काला हो या पीला हो तो उसमें

तो और भी भारतीय बनकर लौटा हैं।

क्या होता है। यानी रंग एक-दसरे से

पिलकर सखी रह सकते हैं या दखी

रह सकते हैं। उनका मिलन ऐमा हो जो

एकात्म हो सकता है या अगर चित्रकार

को समझ नहीं हो तो वह बिल्कल एक

किस्म का विनाश होगा। प्राथमिक रंग

जो पाँच हैं- सफेद, काला, लाल,

पीला और नीला, इनको पूर्ग तरह से

जैसे अँधेरा आता है। अँधेरे के पास

जैसे जल मिलता है। जल से जैसे

तरह अपने विन्यास के लिए विकल

केदारनाथसिंह याद आते है- "आप

विश्वास करें। मैं कविता नहीं कर रहा

हैं। सिर्फ आग की ओर। इसारा कर

पर कई कविताएँ लिखी है। उनका

मानना है कि रज़ा के चित्रों पर जब

मैंने कविताएँ लिखीं तो मुझे उनमें

भी अलीकिक माँ नजर आई जो कि

स्वयं अपने ही आल्हाद की गोद में

बैठी है। वे लिखते हैं- "उनके

चित्रों में दिखती। व्याकुल पुरातन माँ। शिशु के साथ।'' कभी उन्हें

रज़ा के चित्र रंगों की अक्षत से भरी

पजा की थाली जैसे लगते हैं, वे

लिखते हैं- 'पूष्पों की पंखुरियों से

अपनी पहचान है।

भरी/पूजा की

थाली जैसे ये

ध्रव शुक्ल ने भी रज़ा के चित्रों

रजा के रंग को अशोक गब्द की

कवि ध्रव शुक्ल को रजा की सूर्य

रोशनी घुलती है। रोशनी से।

होते दिखाई देते हैं।

वहाँ अपने बारे में सोबकर कैसा लगता है?

 आपके भीतर एक कवि मन छिपा है। कुछ कविताएँ भी आपने लिखी हैं। क्या यह कवि मन कभी चित्रों को प्रभावित करता है?

अब देखिए, वहाँ (पेरिस में) सुबह से शाम तक फ्रांसीसी बोली जाती है। शाम को आकर या दिन में भी मैं अपने

🗇 अब फ्रांस के खुबसरत शहर पेरिस में रहते हुए आपको लगभग छ: दशक होते आए हैं। सात समन्दर पार

हमेशा पेरिस के अपने कमरे में ऐसा ही लगता है कि मैं देश में है। मैं कहीं नहीं गया। मैं हमेशा कहता है कि मैं

यही रह रहा हैं। मानिए, में कहीं नहीं गया। भारत का बिम्ब और इसके मुल्य हमेशा मेरे दिल में हैं, मैं काम कर रहा

हैं। देश में कई लोग इन चीबों को भल भी जाते हैं। हमें जीवन के बारे में सोचना है। और जिस प्रकार से इस प्राति

करते हैं, बढ़ते हैं, अपनी सोई हुई शक्तियों को हमें जगाना है। उसी के आधार पर हम प्रगति कर सकते हैं। हमें अपनी

कबतों से फिर से अपने जन्म में दूसरा जन्म लेना है। नहीं तो हम जानवरों की तरह पैदा हुए हैं, जी रहे हैं और मर

जाएँगे। मैंने अपनी परी धमता से ही कोशिश की है कि ऐसा हो सके, कि मैं इन बातों को समझ सके। विदेश के

कमरे में भारतीय संगीत है, हिंदी की पुस्तके है, विशेष रूप से कविताएँ हैं। घर में हम उर्द बोलते हैं। उर्द मुझे लिखनी

नहीं आती, मगर मैं इकबाल, फैज या गालिब के आपको शेर सुनाऊँ तो आपको मालुम होगा कि मैं अपनी जवान

नहीं भूला हैं। एक भारतीय जो विदेश में रहे, उसका मन इन बातों की ओर क्यों नहीं हो सकता? में फ्रांस गया हूं

आपको हिंदी कविता सुनाता रहता है।

कभी मेरी पत्नी आकर कहती थी-

'क्या पागल हो गए है!' और मैं अजेय

या महादेवी वर्मा या दूसरे कवियों को

पढ़ रहा होता था। एक चित्र में मैंने

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की एक

आज के कठिन समय के बारे में बहुत कर मोच मकते हैं।

बहुत महत्वपूर्ण लगता है। मैं बीहरैगा कि आज कल के भारतीय प्वा अमर्त चित्रों को समझना कलाकार यह देखें कि भारतीयकिला

एक ऐसे स्तर पर पहुँच गई है,होनहाँ

या भारत महा उहा है जरू पट

## मुर्धन्य चित्रकार सैयद हैदर रजा से मुलाकात

विनय उपाध्याय

बड़ा मण्किल होता है आम दर्शक के लिए। उथला कलाबोध अक्यर ही आहे आता है चित्र और दर्शक के बीच। ऐसे में भला रजा के चित्रों को कैसे समझा जागगा?

लागों को चाहिए कि चित्रों को देखें। उन्हें चाहिए संगीत, नृत्य की और ध्यान दें। उन्हें चाहिए कि वे भाषाएँ मीखें। अखबारों में मेरा जिक्र आ जाता है यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह

है कि रजा इन रंगों को क्यों इस्तेमाल

कर रहा है? रजा यह बिंदु क्यों बनाता

है? और खेर रजा ही नहीं दूसरे चित्रकार

भी हैं। उनको देखें। उनका काम

समझने की कोशिश करें और इसी से

जीवन सम्पूर्ण हो सकता है।

पर वह स्वतंत्र है। अब हफ्डिसीम अंतराष्ट्रीय धारणाओं की नकरकुनहीं कर रहे है। यानी कि हमारी अधिकांकि भित्र है। उनके मिद्धांत को मध्यका हम कुछ नई बात करना चाहते ही विश्वास कीजिए कि जो महत्वपूर्ण चित्रकार हैं आजकल भारत के, वे इतना संदर काम कर रहे हैं जो दनिया के किसी भी बड़े म्युनियम में प्रदर्शित किए जा सकते हैं गर्व से। अब जो खोज हो रही है कुछ दिशा और में, कुछ क्षेत्रों में, वह यही है-आध्यात्मिक खोज। मानिए यह मार्ग बहुत कठिन है। हमारे विद्वान हिम्छलय की ओर जाते थे दुनिया छोडकरा और वहाँ पर या तो साधना करते थे वा पूजा करते थे या लिखते थे। उसी प्रकार से हो सकता है कि आजँकल इस डावरेक्यान में, इस दिशा में कुछ काम किया जाए जो कि ऐसा महत्वपूर्ण हो कि दूसरे देश के लोग भी कहें कि इस दिशा में भारते में गरूआत हुई है, और ऐसा हो सर्केता है। मेरा पूरा विश्वास है कि देश मैं जो कुछ हो रहा है, हमारी पीढ़ी के चित्रकारों से और जो युवा चित्रकार हैं वे जो कछ काम कर रहे हैं, इतना महत्वपूर्ण है कि संगीत और नृत्यें की तरह आज चित्रकला भी हमारी आज की संस्कृति का एक अत्यंत गतिशील

अलावा काव्य रचना के साथ

प्रस्तुत किया गया है। शास्त्रीय

लाइन लिखी थी- 'शुन्य में तैरता है 🗇 आप जब भी भारत आते जगत'। मैं ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हैं। पक्ष कही जा सकती है। हैं, यहाँ के युवा चित्रकारों के काम गहरा, व्यापक, बहुरूपी और सुदूरगामी होने के बावजूद हमारी परंपरा में भारतीय शास्त्रीय संगीत पर मानक ग्रंथों का इतिहास बहत समृद्ध नहीं है। इधर रचनाशीलता के नए-रंग-ढंग और नवाचारी प्रयोगों की भी बहुलता रही, लेकिन उसकी तुलना में विमर्श और आलोचना का पलड़ा भी हल्का ही रहा। सदियों पूर्व रचे गए शिक्षा' और 'नाटयशास्त्र' तथा बीसवीं सदी में प्रकाश में आए गीतांजलि' जैसे संगीत ग्रंथ जरूर

'राग रचनांजलि' के नाम से चर्चा में आई प्रतक शास्त्रीय संगीत के विविधि स्वरूपों को समेटती एक दस्तावेजी कोशिश है। कंठ साधना की धनी जयपुर-अतरीली घराने की रससिक्त गायिका सुश्री अश्विनी भिडे देशपांडे ने अपनी गुरू परंपरा से ऑजित चौरासी बंदिशों

को इस किताब में बेहद तरतीब से प्रस्तुत किया है। पाठके प्रारंभ में ही अश्वनी जी ने अपनी मनोभूमि

'मानसोल्लास'.

'पस्तकमालिका'.

विलासं तथा

छिटकी/रंगों की अक्षता हए विनम्र टिप्पणी की है- जीवन के सारे ऋण उतारे नहीं निश्चित ही रजा चित्रकला एवं जा सकते। कई ऋण ऐसे होते हैं जिन्हें मस्तक पर उठाकर ले चलने में ही जीवन की सार्थकता समाई होती हैं मेरी काल्य के समन्वयक हैं। उनका वज्द कविता से सराबोर है। यही वजह है यह 'राग रचनांजलि' इन्हीं गुरूओं के प्रसाद के फलस्वरूप कि उनके चित्र कवियों की मैंने पाई हैं। दरअसल परंपरा में सदियों से प्रवाहमान गुरू कविताओं में भी उभरे हैं। चित्र और और शागिद के आध्यात्मिक रिश्तों की ऐसी सार्थक और प्रकट किताबी शक्ल प्राय: देखने नहीं मिलती। अस्सी से कविता की कदमताल ही जा की भी ज्यादा बंदियों को उनके गग भीर ताल के किया। के

धुँधलके को दूर करते रहे हैं। इधर

का खुलासा करते

बंदिशों का

की साधना के बाद गुरू-उदस्तादों या मनीषियों द्वारा तैयार की गई बंदिशों को समावेशी ढंग से देखना एक अर्थ में हिन्दुस्तानी संगीत की समृद्ध और पुनर्नवा परंपरा से साक्षात्कार करने की पर बहुत ही तार्किक

प्रस्तृति, अध्ययन और अध्यापन तथा श्रवण इन सारे क्षेत्रों से संबंध रखती है। अत: सिर्फ गायक ही नहीं, संगीत के शिक्षण-प्रशिक्षण से लेकर सुपातर श्रोता के

श्रवण-आस्वाद तक इन राग-रचनाओं का महत्व है। पस्तक के साथ ही एक और महत्वपूर्ण कॉम्पेक्ट डिस्क (सीडी) के रूप में दी गई है, जिसमें अश्विनी भिडे देशपांडे की ही आवाज में बंदिशों का गायन और स्वर विस्तार

की अलकियाँ लालित्यपूर्ण/बन पड़ी हैं।



संगीत की समझ रखने बाले कलाकार और जिज्ञासुओं के लिए पूरी बंदिश का लिपिबद्ध स्वर विस्तार प्रकाशित किया गया है। दिलचस्य यह कि चलन में आने वाले राग यमन, भूपाली, हंसध्वनि, सोहिनी, बागेश्री, देव, भारवा आदि के अलावा कई अल्पप्रचलित या अप्रचलित रागों की रचनाएँ भी संग्रहीत हैं। बरसों

विरल अनुभूति ही है। ऐसे गंभीर परिप्रेक्स में 'राग रचनांजलि' विमर्श के कई नए क्षितिज खोलती है। महाराष्ट्र के ज्येष्ठ संगीतविद मिलिंद मालशे ने ख्याल गायन के लिहाज से इन बंदिशों

> विश्लेषण पुस्तक में किया है। उनके अनुसार-बंदिश एक ऐसी संकल्पना है जो संगीत की निर्मिति,